ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 94

सहयोग शुल्क : रु. 1 / ओकटोबर : 2024

# दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

पेरिस पैरालंपिक में देश को गौरवान्वित करने वाले दिव्यांगो को सलाम ।
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

पेरिस पैरालंपिक में देश के दिव्यांगों ने देश को गौरवान्वित किया है ।
– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

# निरामय हेल्थ पॉलिसी

## पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

## लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

## आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

### सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

# संपादकीय

पेरिस पैरालंपिक में देश के दिव्यांग खिलाडियों ने अपनी क्षमताओं का सर्वोच्च प्रदर्शन करते हुए आज पूरे देश को गौरवान्वित किया है । खेल कोई भी हो जब देश का कोई भी खलाडी उसमें देश के लिए पदक लाने और देश का सम्मान बढाने के लिए खेलता है तब मानो पूरा देश उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो जाता है । पेरिस ओलंपिक २०२४ में देश को हमारे खिलाडियों से बहुत उम्मीदें थी लेकिन पदक तालिका में हमारा स्थान बहुत नीचे था । पेरिस ओलंपिक में सभी खिलाडियों ने अपनी क्षमताओं के अनुसार प्रदर्शन किया लेकिन उसे पदकों में परिवर्तित नहीं कर पाये । जिन खिलाडियों ने देश को पदक दिलाये हैं उन्हें हमारी शुभकामनाएं है । पेरिस ओलंपिक में अच्छा प्रदर्शन न होने से देश के कई लोग निराश हो गये थे लेकिन देशवासियों की निराशा को दूर करने का कार्य पेरिस पैरालंपिक २०२४ के खेलों में दिव्यांग खिलाडियों ने किया है ।

पेरिस पैरालंपिक खेलों में भारत ने रिकॉर्ड 29 पदक हासिल किए भारतीय दल ने पेरिस पैरालंपिक खेलों में ७ स्वर्ण, ९ रजत और 13 कांस्य पदक सहित 29 पदकों के साथ अपने ऐतिहासिक अभियान का समापन किया, जो प्रतियोगिता के इतिहास में देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है । इससे पहले टोक्यो पैरालंपिक में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था । टोक्यो पैरालंपिक 2020 में भारत ने 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य पदक समेत कुल 19 पदक जीते थे ।

पेरिस ओलंपिक और पेरिस पैरालंपिक खेलों में देश के खिलाडियों के प्रदर्शन को लेकर कई बहस शुरु हो गई कि पैरालंपिक खिलाडियों का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा था । अगर दिव्यांग खिलाडियों को अच्छी सुविधाएं और कोचींग दी जाए तो पदक तालिका में देश का नंबर और आगे आ सकता है । देश के साधारण खिलाडियों को जो सुविधाएँ और सम्मान मिलते हैं उतनी और शायद उससे अधिक सुविधाएं दिव्यांग खिलाडियों को मिलनी चाहिए ।

सरकार से हमारा नम्र निवेदन है कि दिव्यांग खिलाडियों को अच्छा कोचींग और सुविधाएं प्रदान की जाए तो प्रदर्शन और अच्छा हो सकता है । देश को गौरवान्वित करने वाले सभी दिव्यांग खिलाडियों को हम शुभकामनाएं देते हैं और उनके उज्जवल भावि की कामना करते हैं ।


दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

ओकटोबर : 2024, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-6 अंक : 94

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

# पैरालंपिक खेलों का स्वर्णिम इतिहास

युद्ध हमेशां विनाश लाता है, संसार के कई सारे देश युद्धों के कारण बरबाद हो गये हैं और वर्तमान समय में युक्रेन और रशिया का युद्ध भी उसी दिशा में चल रहा है। लेकिन क्या आप कभी सोच सकते हैं कि कोई विश्वयुद्ध किसी वैश्विक खेल प्रतियोगिताओं का कारण बन सकता है, जो आज भी उसी उत्साह के साथ विश्व में इस खेल का आयोजन किया जा रहा है। हाल ही में संपन्न हुए दिव्यांगो के लिए पैरा ओलंपिक खेलों की शुरुआत का इतिहास रोमांचक रहा है। एक इलाज के तौर पर शुरु की गई खेलों की शुरुआत विश्व फलक पर पैरा ओलंपिक खेल बनकर सामने आई। आज पैरा ओलंपिक खेल केवल एक खेल न रहकर दिव्यांगों की क्षमताओं और उनके मनोबल को प्रदर्शित करने का सब से बड़ा माध्यम है।

शारीरिक और मानसिक रुप से दिव्यांग खिलाडियों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले पैरालंपिक खेलों की शुरुआत द्वितीय विश्व युद्ध के घायल सैनिकों को फिर से मुख्यधारा में लाने के उद्देश्य से हुई थी। स्पाइनल इंजरी के शिकार सैनिकों को ठीक करने के लिए खास तौर से इसे शुरू किया गया था।

साल 1948 में द्वितीय विश्व युद्ध में घायल हुए सैनिकों की स्पाइनल इंजरी को ठीक करने के लिए स्टोक मानडेविल अस्पताल में काम कर रहे न्यूरोलोजिस्ट सर गुडविंग गुट्टमान ने इस रिहेबिलेशन कार्यक्रम के लिए स्पोर्ट्स को चुना था। इन खेलों को तब अंतरराष्ट्रीय व्हीलचेयर गेम्स का नाम दिया गया था।

**पैरा ओलंपिक खेलों का मुख्य उद्देश्य क्या है?**

**पैरा ओलंपिक** खेल का **मुख्य उद्देश्य** शारीरिक और मानसिक रुप से दिव्यांग व्यक्ति को यह बताना कि आप किसी से भी कम नहीं है। आप भी अपने शरीर से

हार ना माने और पूरी दुनिया के सामने डट कर खड़े रहें।

**पैरालंपिक खेलों की शुरुआत**

साल 1948 में लंदन में ओलंपिक खेलों का आयोजन हुआ, और इसी के साथ ही डॉक्टर गुट्टमान ने दूसरे अस्पताल के मरीजों के साथ एक स्पोर्ट्स कंपीटिशन की भी शुरुआत की,जिसे काफ़ी पसंद किया गया। फिर देखते ही देखते डॉक्टर गुट्टमान के इस अनोखे तरीके को ब्रिटेन के कई स्पाइनल इंजरी युनिट्स ने अपनाया और एक दशक तक स्पाइनल इंजरी को ठीक करने के लिए ये रिहेबिलेशन प्रोग्राम चलता रहा।

1952 में फिर इसका आयोजन किया गया इस बार ब्रिटिश सैनिकों के साथ साथ डच सैनिकों ने भी हिस्सा लिया। इस तरह इसने पैरालंपिक खेल के लिए एक मैदान तैयार किया।

**रोम ओलंपिक** (1960)

सब से पहले पैरालंपिक खेलों का आयोजन वर्ष 1960 में रोम में किया गया। इन खेलों में सैनिकों के साथ ही आम लोग भी भाग ले सकते थे। पहले

पैरालंपिक खेलों में 23 देशों के 400 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। शुरुआती पैरालंपिक खेलों में तैराकी को छोड़कर खिलाड़ी सिर्फ व्हीलचेयर के साथ ही भाग ले सकते थे लेकिन 1976 में दूसरे तरह के पैरा लोगों को भी पैरालंपिक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। न्यूरोलोजिस्ट डॉक्टर गुट्टमान 400 व्हीलचेयर लेकर ओलंपिक शहर में पहुंचे। जहां उन्होंने पैरा लोगों के लिए खेल का आयोजन किया। वहीं से शुरुआत हुई मॉर्डन पैरालंपिक खेलों की। ब्रिटेन के मार्गेट माघन पैरालंपिक खेलों में गोल्ड मेडल जीतने वाले पहले एथलीट बने। उन्होंने अर्चेरी इवेंट (तीरंदाज़ी) में गोल्ड मेडल जीता। अर्चेरी डॉक्टर गुट्टमान के ट्रीटमेंट का अहम हिस्सा था।

### टोक्यो ओलंपिक (1964)

1964 में ओलंपिक जापान की राजधानी टोक्यो के पास गया और कुछ ही समय बाद जापान ने भी पैरालंपिक खेलों की मेजबानी में अहम भूमिका निभाई । ये पहला मौका था जब जापान में पैरा एथलीटों ने व्हीलचेयर के साथ कई खेलों में हिस्सा लिया था ।

### मैक्सिको ओलंपिक (1968)

जापान के बाद १९६८ के ओलंपिक की मेजबानी मेक्सिको ने की । वहीं पैरालंपिक इजराइल में आयोजन किया गया । फिर चार साल बाद हीडलबर्ग में आयोजित किया गया । इसके बाद ओलंपिक म्यूनिख में थे । जहां क्वाड्रीपेलेजिक (quadriplegic) रीढ़ की हड्डी की चोटों वाले एथलीट पहली बार इस प्रतिस्पर्धा में उतरे । इसके अलावा नेत्रहीन एथलीटों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । इस ओलंपिक में हिस्सा लेने वाले 44 देशों से 1000 से ज्यादा एथलीटों को खेल प्रेमियों के सामने अपना जोर आजमाते हुए देखा । 1976 टोरंटो ओलंपिक में ऐम्प्युटी और मिक्सड पैरा एथलीटों के डेब्यू के साथ उनकी संख्या 1600 के पास पहुंच गई । ये पहला मौका था जब विशेष रेसिंग व्हीलचेयर टीम के लिए इस्तेमाल किया गया ।

### 1980 के बाद मिली लोकप्रियता

१९८० में राजनीतिक उथल-पुथल के चलते मॉस्को ने पैरालंपिक खेलों की मेजबानी से इनकार कर दिया । जिसके बाद हॉलैंड की राजधानी एम्सटर्डम को इन पैरालंपिक खेलों की मेजबानी का मौका दिया गया । जिसमें कुल 42 देशों के करीब 2500 पैरा एथलीटों ने हिस्सा लिया । पैरालंपिक आंदोलन में पहली बार दिमाग से कमज़ोर एथलीटों को पहली बार शामिल किया गया । जिसकी मेजबानी ब्रिटेन और अमेरिका ने मिलकर की । ये पहला मौका था जिसमें व्हीलचेयर मैराथन रेस को शामिल किया गया ।

**1988 ओलंपिक कोरिया** - 1988 ओलंपिक कोरिया की राजधानी सियोल पहुंचे । कोरिया ने

पहली बार ओलंपिक खेलों के साथ पैरालंपिक खेलों का आयोजन किया गया । यहां पैरालंपिक कमेटी और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक ने इसे सफल बनाने के लिए जबरदस्त काम किया ।

**1992 बार्सिलोना ओलंपिक** -1992 बार्सिलोना ओलंपिक में पैरालंपिक एथलीटों की तादात एकदम से बढ़ गई। इस बार 82 देशों के 3500 एथलीटों ने अपना दावा ठोका ।

**1996 अटलांटा ओलंपिक-** 1996 अटलांटा ओलंपिक में रिकॉर्ड तोड़ देशों के कई एथलीटों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इसके अलावा सिडनी ओलंपिक में 132 देशों ने पैरालंपिक खेलों में हिस्सा लिया । इन खेलों में पहली बार रग्बी और व्हीलचेयर बॉस्केटबॉल जैसे खेलों में लाया गया ।

**2004 एथेंस ओलंपिक**

एथेंस ओलंपिक में रिकॉर्ड 135 देशों ने पैरालंपिक खेलों में हिस्सा लिया जिसमें 17 नए देश और 19 नए खेलों को शामिल किया गया और 4000 एथलीटों ने हिस्सा लिया । इस बार 304 वर्ल्ड रिकॉर्ड बने और 448 पैरालंपिक रिकॉर्ड । चीन ने पदक सूची में पहली बार टॉप किया जबकि ब्रिटेन 35 स्वर्ण पदक के साथ दूसरे स्थान पर रहा । दो ब्रिटिश तैराक डावे रोबर्टस और जिम एंडरसन ने चार स्वर्ण अपने नाम किए ।

**२००८- चीन बेइजींग ओलंपिक** बेइजींग ओलंपिक में १४६ देशों के ३९५१ खिलाडियों ने हिस्सा लिया था।

**२०१२-लंडन ओलंपिक** में १६४ देशों के ४२३७ खिलाडियों ने हिस्सा लेकर इसे सफल बनाया था, १२ साल की अनुपस्थिति के बाद बौद्धिक रूप से विकलांग एथलीटों ने एथलेटिक्स, तैराकी और टेबल टेनिस में भाग लिया ।

**२०१६ -रियो ओलंपिक** में १६० देशों के ४३२८ खिलाडियों ने हिस्सा लिया था । पैरा कैनो और पैरा ट्रायथलॉन को खेल के रूप में जोड़ा गया, जिससे खेलों की कुल संख्या 22 हो गई ।

**२०२०- टोकियो ओलंपिक:** २०२० पैरालंपिक खेलों का आयोजन जापान के टोकियो में किया गया था जिस में १६२ देशों के ४४०३ खिलाडियों ने हिस्सा लिया था । टोकियो ओलंपिक में भारतीय खिलाडियों ने अच्छा प्रदर्शन किया । टोक्यो पैरालंपिक 2020 में भारत ने 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य पदक समेत कुल 19 पदक जीते थे ।

**२०२४-पैरिस ओलंपिक:** २०२४ के पैरा ओलंपिक खेलों का आयोजन पेरिस में किया गया था जिसका थीम था चलों चलें और जश्न मनायें. जिसका उद्देश्य ग्रीष्मकाल में गतिशीलता के आनंद को अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना था । इस पैरा ओलंपिक में कुल २२ खेलों के ५४९ पदक स्पर्धाओं के लिए १७० देशों के ४४६३ से अधिक खिलाडियों ने हिस्सा लिया था । इस बार भारत ने ७ गोल्ड, ९ सिल्वर और १३ ब्रोन्ज मेडल कुल २९ मेडल जीतकर १८ वां स्थान हासिल किया था ।

★★★

# पेरिस पेरा ओलंपिक २०२४ में भारत का प्रदर्शन

पैरालंपिक में भारत ने ऐतिहासिक प्रदर्शन किया है । अबकी बार भारत ने रिकॉर्ड 29 पदक हासिल किए भारतीय दल ने **पेरिस पैरालंपिक खेलों** में सात स्वर्ण, नौ रजत और 13 कांस्य पदक सहित 29 पदकों के साथ अपने ऐतिहासिक अभियान का समापन किया, जो प्रतियोगिता के इतिहास में देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है । इससे पहले टोक्यो पैरालंपिक में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था । टोक्यो पैरालंपिक 2020 में भारत ने 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य पदक समेत कुल 19 पदक जीते थे । भारत ने इस बार पैरालिंपिक में भाग लेने के लिए 84 एथलीटों का अपना अब तक का सबसे बड़ा दल भेजा था । इस प्रभावशाली प्रदर्शन के साथ भारत ने पैरालंपिक खेलों के इतिहास में 50 पदकों का आंकड़ा भी पार कर लिया इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ, भारत ने टोक्यो 2020 पैरालिंपिक में अपने पहले के सबसे सफल अभियान को पीछे छोड़ दिया है । 28 अगस्त से रविवार को कार्यक्रम के समापन तक रिकॉर्ड 84 पैरा-एथलीटों ने तिरंगे का प्रतिनिधित्व किया, जिन्होंने 12 विषयों में प्रतिस्पर्धा की, जबकि टोक्यो 2020 में केवल नौ थे । भारत ने पेरिस में तीन खेलों में भी अपनी शुरुआत की: पैरासाइक्लिंग, पैरा रोइंग और ब्लाइंड जूडो ।

पांच खेलों में 29 पदक जीते गए, जिनमें से 17 ट्रैक और फील्ड स्पर्धाओं से आए । इससे यह सुनिश्चित हुआ कि भारत इस मेगा इवेंट में पदक तालिका में शीर्ष 20 में रहा, जिसमें एक बार फिर चीन का दबदबा रहा ।

रविवार को प्रतियोगिता के अंतिम दिन सभी स्पर्धाएँ पूरी होने के बाद चीन 94 स्वर्ण सहित 220 पदकों के साथ पैरालंपिक पदक तालिका में शीर्ष पर रहा । एथेंस 2004 के बाद से चीन हर पैरालंपिक में पदक तालिका में शीर्ष पर रहा है ।

ग्रेट ब्रिटेन 49 स्वर्ण के साथ पेरिस में दूसरे स्थान पर रहा, उसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका रहा, जिसने 36 खिताब जीते।

## एथलेटिक्स में जीते सबसे ज्यादा पदक

भारतीय खिलाड़ियों ने इस बार पैरा एथलेटिक्स

में सबसे ज्यादा 17 पदक जीते हैं। इसमें चार स्वर्ण भी शामिल हैं। इसके बाद दूसरा नंबर पैरा बैडमिंटन का रहा। इसमें भारत ने एक स्वर्ण समेत 5 पदक जीते। पैरा शूटिंग में भारत को एक स्वर्ण समेत 4 पदक हासिल हुए। पैरा आर्चरी में भारत ने एक स्वर्ण समेत 2 पदक और पैरा जूडो में 1 कांस्य पदक जीता।

## पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों का अब तक का प्रदर्शन

पैरालिंपिक के इतिहास पर नजर डालें तो 1968 से लेकर 2016 के दौरान भारतीय खिलाड़ियों ने पैरालंपिक गेम्स में सिर्फ 12 पदक जीते थे लेकिन इसके बाद पैरालंपिक गेम्स में भारतीय खिलाड़ियों ने उड़ान

भरी। टोक्यो पैरालंपिक 2020 में भारतीय खिलाड़ियों ने 19 और मैजूदा पेरिस पैरालंपिक 2024 में 29 पदक जीते हैं, जिसका कुल योग 48 होता है। पैरालंपिक गेम्स में भारत की यह एतिहासिक उड़ान काफी मायने रखती है।

## पेरिस पैरालंपिक में अवनि ने दिलाया भारत को

## पहला पदक

पेरिस पैरालंपिक 2024 में भारत को पहला पदक स्टार शूटर अवनि लेखरा ने दिलाया, जो स्वर्ण पदक के रूप में आया । इसके बाद नितेश कुमार (पैरा बैडमिंटन), सुमित अंतिल (पैरा एथलेटिक्स), हरविंदर सिंह (पैरा तीरंदाजी), धर्मबीर (पैरा एथलेटिक्स), प्रवीण कुमार (पैरा एथलेटिक्स) और नवदीप सिंह ने (पैरा एथलेटिक्स) भी स्वर्ण पदक जीता है। भारतीय खिलाड़ियों ने 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य पदक समेत कुल 29 पदक हासिल किए। 29वां पदक पैरा एथलीट नवदीप सिंह ने मेन्स जैवलिन थ्रो एफ41 में दिलाया, जो स्वर्ण के रूप में रहा । इस तरह भारत का पहला और आखिरी पदक स्वर्ण पदक के रूप में रहा । पहली बार भारत ने पैरालंपिक गेम्स में इतने ज्यादा स्वर्ण पदक जीते हैं। इससे पहले भारतीय खिलाड़ियों ने टोक्यो पैरालंपिक में 5 स्वर्ण पदक जीते थे ।

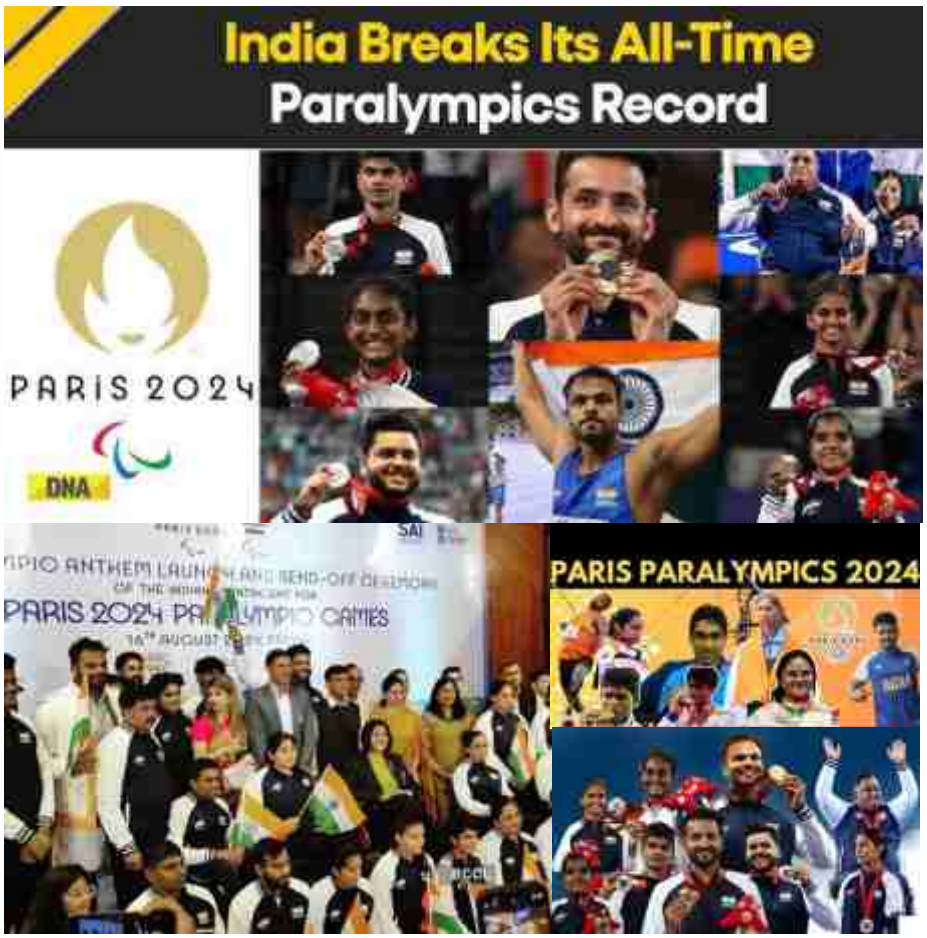


## पेरिस पैरालंपिक 2024 में भारत के पदकवीर

अवनि लेखरा (पैरा शूटिंग)- स्वर्ण पदक, आर2 वूमेन्स 10 मीटर एयर राइफल (एसएच1), मोना अग्रवाल (पैरा शूटिंग)- कांस्यपदक, वूमेन्स 10 मीटर एयर राइफल (एसएच1), प्रीति पाल (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य, वूमेन्स 100 मीटर रेस (टी35), मनीष नरवाल (पैरा शूटिंग)- रजत पदक, मेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (एसएच1), रुबीना फ्रांसिस (पैरा शूटिंग)- कांस्य पदक, वूमेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (एसएच1), प्रीति पाल (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, वूमेन्स 200 मीटर रेस (टी35), निषाद कुमार (पैरा एथलेटिक्स)-रजत पदक, मेन्स हाई जंप (टी47), योगेश कथुनिया (पैरा एथलेटिक्स)- रजत पदक, मेन्स डिस्कस थ्रो (एफ56), नितेश कुमार (पैरा बैडमिंटन)-स्वर्ण पदक, मेन्स सिंगल्स (एसएल3), मनीषा रामदास (पैरा बैडमिंटन)- कांस्य पदक, वूमेन्स सिंगल्स (एसयू5), थुलासिमथी मुरुगेसन (पैरा

बैडमिंटन)-रजत पदक, वूमेन्स सिंगल्स (एसयू5), सुहास यथिराज (पैरा बैडमिंटन)-रजत पदक, मेन्स सिंगल्स (एसएल4), शीतल देवी-राकेश कुमार (पैरा तीरंदाजी)- कांस्य पदक, मिक्स्ड कंपाउंड ओपन, सुमित अंतिल (पैरा एथलेटिक्स)-स्वर्ण पदक, मेन्स जैवलिन थ्रो (एफ64), नित्या श्री सिवन (पैरा बैडमिंटन)- कांस्य पदक, वूमेन्स सिंगल्स (एसएच6), दीप्ति जीवनजी (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, वूमेन्स 400 मी. (टी20), मरियप्पन थंगावेलु (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, मेन्स हाई जंप (टी63), शरद कुमार (पैरा एथलेटिक्स)- रजत पदक, मेन्स हाई जंप (टी63), अजीत सिंह (पैरा एथलेटिक्स)- रजत पदक, मेन्स जैवलिन थ्रो (एफ46), सुंदर सिंह गुर्जर (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, मेन्स जैवलिन थ्रो (एफ46), सचिन सरजेराव खिलारी ( पैरा एथलेटिक्स)- रजत पदक, मेन्स शॉट पुट (एफ46), हरविंदर सिंह (पैरा तीरंदाजी)- स्वर्ण पदक, मेन्स इंडिविजुअल रिकर्व ओपन, धर्मबीर (पैरा एथलेटिक्स)- स्वर्ण पदक, मेन्स क्लब थ्रो (एफ51), प्रणव सूरमा (पैरा एथलेटिक्स)- रजत पदक, मेन्स क्लब थ्रो (एफ51), कपिल परमार (पैरा जूडो)- कांस्य पदक, मेन्स 60 किलो (जे1), प्रवीण कुमार (पैरा एथलेटिक्स)- स्वर्ण पदक, मेन्स हाई जंप (टी44), होकाटो होटोजे सेमा (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, मेन्स शॉट पुट (एफ57), सिमरन शर्मा (पैरा एथलेटिक्स)- कांस्य पदक, वूमेन्स 200 मीटर (टी12), नवदीप सिंह (पैरा एथलेटिक्स)- स्वर्ण पदक, मेन्स जैवलिन थ्रो (एफ41)।

★★★

# भगवती देवी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजली कार्यक्रम का आयोजन

भाद्र सुद पूर्णिमा और दिनांक १८-९-२०२४ बुधवार के दिन ११ बजे अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के आद्यस्थापक और नारी जागरण के प्रणेता ममता की मूरत शक्ति स्वरुपा माता भगवती देवी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में गायत्री परिवार नारणपुरा द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों की संस्था स्मित चाइल्ड डेवलपमेन्ट एण्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर -अहमदाबाद में श्रद्धांजली कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में मनोदिव्यांग बच्चों को गायत्री परिवार के मनोजभाई त्रिवेदी ने गायत्री मंत्रोच्चार, पूजन अर्चन, दीपयज्ञ आदि करवाया गया था। श्रद्धांजली कार्यक्रम के बाद बच्चों के मिष्ठान के साथ भोजन दिया गया था। कार्यक्रम के अंत में संस्था के संचालक चंद्रसिंह चौहाण ने आभार प्रकट किया था।

## अंध कल्याण केन्द्र राणीप अहमदाबाद में दिव्यंगजनों के सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन

अंध कल्याण केन्द्र राणीप अहमदाबाद में दिव्यंगजनों के सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन किया गया था । मनोदिव्यांग लाभार्थीयों की केटेगरी में नवजीवन चेरिटोबल ट्रसट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फॉर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग विद्यार्थीयों ने स्टंट से भरपूर डान्स की प्रस्तुति कर के उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया था । छात्रों द्वारा प्रस्तुत आर्मी डान्स को स्पर्धा में पहला नंबर देकर इनाम दिया गया था । कार्यक्रम की शुरुआत में प्रार्थना को भी डान्स के रुप में प्रस्तुत किया गया था ।

## मोडासा में आयोजित हुआ उत्तर झोन के दिव्यांगजनो का उमंग उत्सव

वर्ष २०२४ का गुजरात सरकार का उत्तर झोन का दिव्यांगजनों का विशेष उमंग उत्सव १२-९-२०२४ के दिन मोडासा में आयोजित किया गया था ।इस उमंग उत्सव में नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फॉर मेन्टली डिसेबल्ड के १० छात्रों ( भूमि, जिया, प्रियल, विद्या,तन्वी,देव,जयदेव, ध्वनित, रुद्र और धार्मिक) ने १० मिनट का राजस्थानी लोक नृत्य प्रस्तुत किया था ।

## निलेश पंचाल को बेस्ट स्पेशियल एज्युकेटर के दिव्यांग केटेगरी के एवोर्ड से सम्मानित किया गया ।

कर्णाटका फिल्म एकेडेमी और कर्णाटक स्टेट फेडरेशन फोर डिफ्रन्टली एबल आयोजित दिव्यांग फेशन एण्ड टेलेन्ट शो में साल २०२४ के लिए मनोदिव्यांग छात्रों के लिए किए गये कार्यों की सराहना करने के लिए नवजीवन चेरीटेबल ट्स्ट के स्पेशियल टीचर निलेश पंचाल को बेस्ट स्पेशियल एज्युकेटर के दिव्यांग केटेगरी के एवोर्ड से सम्मानित किया गया ।

# ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

# ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

## मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर